नाम : डॉ. सुजाता गुप्ता दिनांक :- 8.05.2020
विभाग : हिंदी
वर्ग : स्नातक द्वितीय खण्ड
पत्र : IV
शीर्षक :- 'कलगी बाजरे की' कविता की सप्रसंग व्याख्या
कवि :- सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

'कलगी बाजरे की' कविता की सप्रसंग व्याख्या :

अनुभूति और भाषा को प्रयोग के नए स्वरों और प्रतीकों के माध्यम काव्यभाषा का संस्कार, अज्ञेय ने प्रस्तुत किया है। संवेदना और शिल्प के क्षेत्र में नवीन प्रयोग का जीवंत उदाहरण अज्ञेय की कविता 'कलगी बाजरे की' है। इस कविता के माध्यम से कवि पुराने उपमानों को त्यागकर, उनकी जगह नए उपमानों से अपनी प्रेमिका के रूप-सौंदर्य का वर्णन करता है। रीतिकालीन, निरंतर नए किए गए प्रतिमानों के द्वारा ही प्रकृति, प्रेम और सौंदर्य का वर्णन उबाऊ हो गया है। सीमित उपमानों से ही प्रेम की व्याख्या करना, उसे मंजूर नहीं है। उनके स्थान पर वह नए प्रतीकों से, प्रयोगों से सौंदर्य को पुनः यथार्थवादी दृष्टिकोण देना चाहता है।

इस कविता के माध्यम से वह अपनी नायिका की तुलना 'बाजरे की कलगी' से करता है। वह उसे हरी बिछी घास के समान विस्तृत प्रेम प्रतीक पर इठलाती बाजरे की कली समान लहराती नायिका समझ, तुलना कर रहे हैं। वे अपनी प्रेमिका को ओस की तारिका या फिर शरद ऋतु में सुबह-सुबह जल में खिलनेवाले सफेद कमल-पुष्प भी नहीं कह वर्णित कर रहे हैं। उन्हें वे चम्पा की ताजी और खुशबूदार कली कह कर भी व्यंजित नहीं करते हैं। फिर वे प्रेमिका से यह भी कहते हैं, इन उपमानों से यदि मैंने

तुम्हारी तुलना नहीं की है, तो तुम यह मत समझ लेना कि मैं तुम्हारे सौंदर्य से विस्मित और प्रभावित नहीं हुआ। या फिर मेरे हृदय में भावनाओं का सागर उथला पड़ा है। मैं तो इन पुराने रीतिकालीन रूढ़ हो चुके उपमानों से, तुम्हारे कोमल सौंदर्य की तुलना कैसे करूँ? ये सारे प्रतीक इतनी बार विभिन्न कविताओं में प्रयुक्त हो चुके हैं, कि अब इनसे कोई चमत्कार या प्रभाव निकलता नहीं जान पड़ता। इन पुराने प्रतीकों का सौंदर्य लगभग समाप्त हो चुका है। मानो इन शब्दों की, प्रतीकों की सुंदरता कब से इनसे छिटककर दूर खड़ी हो चुकी है। कवि कहते हैं, कि प्रिये! तुम यह ना समझना कि मैं तुम्हारे प्रति आकर्षित नहीं हूँ? तुम्हारे रूप की प्रशंसा ना करना, ऐसा नहीं कि मेरा मन कहीं और आसक्त है? बल्कि इन उपमानों में वह आकर्षण नहीं रहा, जिससे तुम्हारे अभूतपूर्व प्रेम और सौंदर्य का गांभीर्य स्पष्ट हो सके।

जिस प्रकार बर्तनों को अधिक घिसने के कारण उनकी कांति क्षीण हो जाती है, उसी प्रकार की दशा इन प्रतीकों की है। इन उपमानों में आकर्षण बिल्कुल ही समाप्त हो चुका है। अत्यधिक प्रयोग होने के कारण प्रतीकों की चमक खो गयी है। इसीलिए ये सारे उपमान अब पुराने हो चुके हैं। इसलिए कवि प्रेमिका का सौंदर्य उस बिखरी हरी घास के रूप में चित्रित करते हैं। जिसका प्रेम विस्तृत और व्यापक है।

साथ ही कवि, मोहभंग से उभरी तस्वीर को शहरों के सीमित फलक के माध्यम से रखते हैं। गाँवों की अपेक्षा शहर का छोटा-सा सुकुचाया परिसर और उसमें आमलों की सीमित परिधि में खिला 'जूही का फूल', भी उस सौंदर्य के उपमान को नहीं दर्शा पा रहा है। प्रेमिका का प्रेम और सौंदर्य कवि के लिए का विस्तृत

Scanned with CamScanner

पैमाना है, जिसे वह शहर के संकुचित वातावरण से अलग विराट के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं। इन पंक्तियों के द्वारा कवि का प्रकृति प्रेम, विराट सृष्टि के सामने मनुष्य की नगण्यता का रूप दिखलाई देता है। शब्द जादू हैं और आपकी भावनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। 'हरी बिछली घास' की विस्तृत भूमि को अपने प्रेम फलक का विस्तार बना, वह 'कलगी बाजरे की' को अपनी नायिका के प्रेम-सौंदर्य का प्रतीक बनाता है। वह डोलती, लहराती बाजरे की कली का उपमान अपनी नायिका को देता है।

कविता में समापन की ओर आता कवि संसृति के वीरान-घने में, उस विस्तृत फलक में स्वयं को अज्ञात के प्रति समर्पित करते हैं। प्रकृति की विशालता के सम्मुख कवि को अपनी नगणनता का बोध होता है। उस एकांत नीरव वातावरण में वह इस प्रकृति के प्रति, विराट के प्रति समर्पण का भाव रखता है। मानों उस विशाल संसृति के आगे वह एकाकार को, स्वयं को समर्पित कर देते हैं।

कवि अपनी प्रेमिका से यह प्रश्न भी करते हैं कि निश्चय ही शब्दों के माध्यम से आप अपने प्रेम को प्रकट करते हैं, उन्हें प्रदर्शित करते हैं। मगर, इन सब से ऊपर समर्पण की भावना है। इसी समर्पण को हम प्रेम का स्वरूप नहीं मान सकते? क्या इसका कोई मोल नहीं है? कवि प्रेम का प्रदर्शन, समर्पण के माध्यम से रखते हैं, जो निश्चय ही एक विशाल और उदात्त भावना है, उपमानों और प्रतीकों से भी बढ़कर है।

Scanned with CamScanner